L—1763

B. A. M. S. (Third Prof.) (AYURVEDA) EXAMINATION, 2011

CHARAK UTTARARDHA

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

नोट—सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. "स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तु तद् वृष्यं तद्रसायनम्" इस श्लोक का सन्दर्भ सहित अर्थ लिखते हुए वाजीकरण की परिभाषा, प्रयोजन तथा सर्वोत्तम वाजीकरण का वर्णन करें। 15

2. ज्वर का निदान और सम्प्राप्ति बताते हुए आगन्तुज ज्वर का चिकित्सा सहित वर्णन करें। 15

$5 \times 4 = 20$

3. टिप्पणियाँ लिखिए—

(i) प्रमेय की साध्यासाध्यता।

(ii) उदर रोग—सम्प्राप्ति।

(iii) श्वास रोग की चिकित्सा

(iv) मदात्मय

P. T. O.

4. वामक विरेचक द्रव्यों की कार्मुकता बताते हुए सुधाकल्प क वर्णन करें। 15

5. अनुवासन वस्ति के योग्य अयोग्य का उल्लेख करते हुए मात्रा वस्ति का वर्णन करें। 15

6. टिप्पणियाँ लिखिए— 5 × 4 = 20

(i) आनूपजांगल देश लक्षण।

(ii) धामार्गव कल्प।

(iii) जीवादान।

(iv) शिरोविरेचन।

M – 1998

B.A.M.S. (Third Prof.) (AYURVEDA) EXAMINATION, 2012

CHARAK UTTARARDHA

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

ी प्रश्न अनिवार्य हैं।

ोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्" इस श्लोक की सन्दर्भ ित व्याख्या करते हुए कुटी प्रावेशिक एवं वातातपिक रसायन धियों का वर्णन करें। 15

ातरक्त' से आप क्या समझते हैं ? इसके निदान, भेद, सम्प्राप्ति था चिकित्सा सूत्र का उल्लेख करें। 15

न पर टिप्पणियाँ लिखिए— 5 × 4 = 20

) हिक्का-श्वास समानता।

i) कामली तु विरेचनैः।

ii) त्रिविध देश।

v) पंचकर्म के अयोग्य।

4. कल्प स्थान का वैशिष्ट्य प्रतिपादित करते हुए मदनफल संग्रह एवं प्रयोग विधि का वर्णन करें। 15

5. पंचकर्म से क्या समझते हैं ? कर्म, काल एवं योग बस्ति का उल्लेख करते हुए 'सर्वाचिकित्सामपि बस्तिमेके" सूत्र की व्याख्या करें। 15

6. निम्न पर टिप्पणियाँ लिखिए— $5 \times 4 = 20$
   (i) षडंगपानीय।
   (ii) उरुस्तम्भ में पंचकर्म।
   (iii) चतुरंगुल कल्प।
   (iv) संसर्जन कर्म।

M – 1618

B.A.M.S. (Third Prof.) AYURVEDA EXAMINATION, 2012

CHARAK UTTARARDHA

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

ट—**सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. "तयोः श्रेष्ठतरः पूर्वोविधि, स तु सुदुष्करः" इस श्लोक की सन्दर्भ सहित व्याख्या करते हुए रसायन की परिभाषा, लाभ एवं आचार रसायन का वर्णन करें। 15

2. रक्त पित्त रोग के निदान, रूप, भेद, सम्प्राप्ति का चरक चिकित्सा के सन्दर्भ में वर्णन करें। 15

3. टिप्पणियाँ लिखिए— $5 \times 4 = 20$
   (i) विभिन्न कुष्ठों में दोषों की प्रधानता।
   (ii) ग्रहणी।
   (iii) पाण्डु-कामला।
   (iv) पक्षाघात।

4. कल्प स्थान का वैशिष्ट्य प्रतिपादित करते हुए मदनफल की प्रयोग विधि का वर्णन करें। 15

P. T. O.

5. स्नेहन, स्वेदन के लाभ बताते हुए संसर्जन कर्म का विशद वर्णन करें। 15

6. टिप्पणियाँ लिखिए— $5 \times 4 = 20$
   (i) जीमूतक कल्प।
   (ii) चतुरंगुल कल्प।
   (iii) अष्ट महादोषकर भाव।
   (iv) अर्धावभेदक।

N – 1598

B. A. M. S. (Third Prof.) (AYURVEDA)

EXAMINATION, 2013

CHARAK UTTARARDHA

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

नोट– सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. रसायन का लाभ को बताते हुए कुटी प्रावेशिक रसायन विधि का वर्णन करें। 15

2. गुल्म के निदान, संप्राप्ति, लक्षण एवं चिकित्सासूत्र का वर्णन कीजिए। 15

3. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 20
   (i) योगराज
   (ii) धातुगत ज्वर लक्षण
   (iii) वाजिकरण
   (iv) शुक्रप्रवृत्ति के कारण।

P.T.O.

4. वमन एवं विरेचन की परिभाषा, वमन एवं विरेचन द्रव्यों की क्रियाविधि तथा औषधियों की संग्रह विधि का वर्णन कीजिए। 15

5. प्रवर, मध्य, हीन शुद्धि के लक्षण लिखकर अनुवासन वस्ति का प्रयोगकाल एवं अनुवासन तथा निरूह वस्ति का क्रम का वर्णन कीजिए। 15

6. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 20

(i) चतुरंगुल कल्प
(ii) वस्तिदाता दोष
(iii) दृढ़वल
(iv) स्नेहन योग्य पुरुष।

P – 1868

B. A. M. S. (Third Prof.)
EXAMINATION, Nov./Dec., 2014
CHARAK SAMHITA
UTTARDH

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

नोट- (i) **सभी** प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
(ii) प्रश्नों के अंक सामने अंकित हैं।

खण्ड - 'अ'

अतिलघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों का उत्तर **एक** शब्द या **एक** पंक्ति में लिखें- $1 \times 10 = 10$

(i) बाधन किसका भेद है ?
(ii) वासाधृत किस रोग में प्रधान..... औषधि है।
(iii) तृतीयक ज्वर के भेद लिखें।
(iv) बाजीकरण की निरूक्ति लिखें।
(v) तीन सप्ताह तक शिलाजतु का प्रयोग कहलाता है ?

(vi) भल्लातकाद्य घृत का रोगाधिकार है।
(vii) काकण कुष्ठ में कौन सा दोष प्रधान होता है ?
(viii) भूतोन्माद की चिकित्सा का नाम लिखें।
(ix) कसहरी तकी का नामकरण किसके आधार पर किया गया है ?
(x) ''हृदय स्पन्दन रौक्ष्य स्वेदाभाव: श्रमस्तथा'' यह लक्षण किस रोग का पूर्वरूप कहा जाता है ?

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

2. निम्न प्रश्नों के उत्तर **दो** से **तीन** पंक्तियों में लिखें- 5×4=20

(i) शिलाजीत सेवन में पथ्य लिखें।
(ii) ज्वर के पूर्वरूप लिखें।
(iii) कफज गुल्म की चिकित्सा सूत्र सहित लिखें
(iv) पिछली वर्धमान रसायन का वर्णन करें।
(v) अबलापेक्षिणीं मात्रां किं पुनर्यो.....। सूत्र का आशय स्पष्ट करें।

निबंधात्मक प्रश्न

3. निम्न में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखें- 10×2=20

(i) रुदहवास्वेदाम्बुवाहीनि दोषा: स्रोतांसिसंचिता: प्राणाग्न्यपानान् संदूष्यजनयन्त्य.....।।
उपर्युक्त श्लोक की पूर्ण विवेचना करते संबंधित रोग के पूर्वरूप साध्यासाध्यता चिकित्सा सूत्र लिखें।

(ii) धमनीभि:श्रितादोषा हृदयंपीडयन्ति हि।
संपीढयमानो व्यथते.....।।
इस श्लोक की विवेचना करते हुए रोग के भेद, लक्षण एवं चिकित्सा लिखें।

(iii) तस्यं न स्नेहनं कार्यं.....कारणम।।
इस सूत्र को पूर्ण करते हुए संबंधित रोग की संप्राप्ति एवं साध्यासाध्यता लिखकर उन्मादरोग की औषध चिकित्सा लिखें।

खण्ड - 'ब'

अतिलघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों का उत्तर **एक** शब्द या **एक** पंक्ति में लिखें- 1×10=10

(i) शरद ऋतु में औषधि के किस भाग का संग्रह करना चाहिए।
(ii) कृत वेधन वमन कल्प का प्रयोग किस व्याधि में प्रधान कहा गया है ?
(iii) अभ्यंगार्थ किस स्नेहपाक का प्रयोग करते हैं ?
(iv) विरेचन के कितने दिन बाद बस्ति (निरूह) का प्रयोग करना चाहिए।
(v) बस्ति व्यापद की संख्या कितनी है ?
(vi) सप्तलाव शंखिनी का उपयोगी कौन सा भाग है ?

(vii) इक्ष्वाकु का प्रयोग उत्तम होता है।
(viii) महाजालिनी एवं कोठफला किस द्रव्य के ना
हैं ?
(ix) कर्म एवं योग वस्ति की संख्या लिखें।
(x) वत्सक एवं चतु रंगुल के कितने-कितने कल्
का वर्णन किया गया है ?

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

2. निम्न प्रश्नों के उत्तर दो से तीन पंक्तियों में लिखें- 5×4=2

(i) तीक्ष्ण विरेचक द्रव्य का नाम तथा उसके क
लिखें।
(ii) मदन फल संग्रह विधि एवं काल लिखें।
(iii) कल्पस्थान का महत्व लिखें।
(iv) शिरो विरेचन के योग्य एवं अयोग्य लिखें।
(v) तंत्रयुक्तियाँ एवं महत्व लिखें।

निबंधात्मक प्रश्न 10×2=

1. इक्ष्वाकु एवं सुधाकल्प का विस्तृत वर्णन करें।
2. बस्ति रोगों के नाम, कारण एवं आयु अनुसार बस्ति मात्रा लिखें।

R – 1834

B. A. M. S. (Third Prof.) (Old Course) EXAMINATION, 2015

चरक संहिता उत्तरार्ध

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

नोट- कोई पाँच प्रश्न हल करो। सभी प्रश्न समानांकी हैं।

1. ज्वर रोग सम्प्राप्ति, चिकित्सा, चिकित्सा का वर्णन करो। 20
2. अपस्मार रोग सम्प्राप्ति, चिकित्सा एवं उन्माद साध्यासाध्यता का वर्णन करो। 20
3. ग्रहणी रोग में अग्नि का महत्व स्पष्ट करें एवं चिकित्सा, साध्यासाध्यता का वर्णन करो। 20
4. संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत करें (कोई चार)- 20
   (i) प्रमेह, कुष्ठ, मूत्र रोगों की रसायन औषधियाँ
   (ii) शुक्र, मांसवर्धक वस्ति योजना
   (iii) वमन, विरेचन की चिकित्सकीय उपयोगिता
   (iv) वमन, विरेचन के अयोग्य रोगी।

P.T.O.

5. संक्षिप्त व्याख्या करो- (कोई चार)- 20

(i) वस्ति भेद विधि वर्णन

(ii) पक्वाशय शोधक वस्ति प्रयोगार्थ कषायों का वर्णन

(iii) वस्ति प्रक्षेप द्रव, द्रव्यों का वर्णन

(iv) शिरो विरेचन चिकित्सा एवं उसका महत्व

(v) त्रिफला रसायन कितने हैं ? प्रत्येक का वैशिष्ट्य स्पष्ट करें।

6. जीमूतक एवं इस्वाकु कल्पों की परिगणना करें। प्रयोगार्थ रोग चिन्हित करें। 20

100

Roll No. .....

U – 1515

B. A. M. S. (Third Prof.) (New Course) EXAMINATION, 2018

चरक संहिता उत्तरार्ध

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

Minimum Pass Marks : 50

नोट- कोई पाँच प्रश्न हल करो। अंक विभाजन सम्मुख अंकित हैं।

1. रसायन, वाजीकरण चिकित्सा को परिभाषित कर वैशिष्ट प्रतिपादित करें। 20

2. ज्वर रोग सम्प्राप्ति चिकित्सा का उल्लेख कर षड्गपानीय आमपाचक जल है सिद्ध करो। 20

3. राजयक्ष्मा रूप, अपस्मार सम्प्राप्ति, रक्त पित्त भेद चिकित्सा, गुल्म निदानों का संक्षिप्त उल्लेख करो। 20

4. वस्ति चिकित्सा प्रधान्य सिद्ध कर, वस्ति के भेदों की परिगणना करो। 20

5. टिप्पणियाँ लिखें (कोई चार)- 20

(i) वमन विधि

(ii) पाण्डु चिकित्सा

(iii) गृहणी चिकित्सा

(iv) अर्श सम्प्राति

(v) योनि व्यापद चिकित्सा सूत्र।

6. संक्षिप्त व्याख्या करो (कोई **चार**)- 20

(i) च्यवनप्राशावलेह

(ii) कुष्ठ के भेद

(iii) प्रमेह दोष दूष्य

(iv) उन्माद चिकित्सा

(v) संसर्जनक्रम।